

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ५४

नित नवल सुशील

साहित्यिक कृतित्व आ समीक्षा

उपन्यास, नाटक आ लघुकथा

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

मूल कृति : गजेन्द्र ठाकुर

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ५४

नित नवल सुशील

चारि मूल कृति, समीक्षात्मक विवाद आ सिद्धान्तक पुनर्पाठ

मूल ग्रन्थकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादकीय समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

पाठाधार आ आलोचनात्मक पद्धति

“नित नवल सुशील”क स्रोत रूपमे संलग्न १२४-पृष्ठीय मूल Word पोथी अध्ययन कएल गेल अछि। एहिमे सुशील चन्द्र झाक परिचय, साहित्यिक प्राथमिकता सम्बन्धी विवाद, ‘घराडी’, ‘गामबाली’, ‘भामती’, ‘अस्मिता’ आ पछिला सिद्धान्त-सिद्धान्तोत्तर विभाग उपस्थित अछि।

ई समीक्षा मूल आलोचकक कथनक समीक्षा अछि, सुशीलक चारू स्वतंत्र पुस्तकक सम्पूर्ण मूल पाठक आलोचना नहि। पुस्तकक संस्थागत आरोप, ऐतिहासिक पूर्वत्वक दावा आ सिद्धान्तकारक उद्धृत सामान्यीकरणकें संबंधित अलग प्रमाण उपलब्ध नहि होएबाक स्थितिमे लेखकक मतक रूपमे चिन्हल गेल अछि।

अध्ययनक मूल अनुक्रम

- 01 — सुशीलक साहित्यिक जीवन आ कृतिपञ्जीक आधार
- 02 — छद्म समीक्षा-विवाद : साहित्यिक प्राथमिकता आ प्रमाण
- 03 — घराडी : भूमिकेन्द्रित उपन्यासक मूल्यांकन
- 04 — गामबाली : मृत्यु, दाह-संस्कार आ सामाजिक अधिकार
- 05 — भामती नाटक : रंगमंच, दर्शन आ स्त्री-पात्र
- 06 — अस्मिता : लघुकथाक छोट आकार आ सामाजिक विडम्बना
- 07 — सिद्धान्त : आलोचनात्मक औजारक उपयोग
- 08 — सिद्धान्तोत्तर : विखण्डनक बादक आलोचना
- 09 — समेकित पाठ : पुनर्मूल्याङ्कनक इतिहास आ न्याय

01 सुशीलक साहित्यिक जीवन आ कृतिपञ्जीक आधार

“नित नवल सुशील”क अध्याय ० सुशील चन्द्र झाक परिचय, दुलहा गाम, पारिवारिक सन्दर्भ आ चारि मुख्य कृतिक प्रकाशित विवरण दैत अछि। ‘घराडी’ (१९७३), ‘गामवाली’ (१९८२), ‘भामती’ (पहिल मंचन १९९१, प्रकाशन २०१३) आ ‘अस्मिता’ (२०१६)क क्रम साहित्यिक जीवनीक आधार बनैत अछि। एहि विवेचनमे लिखित नाटक आ मंचित नाटक, लघुकथा आ उपन्यासक अलग विधागत मानदण्ड अपनाबयब अनिवार्य अछि।

व्यक्तिक राजनीतिक-सामाजिक गतिविधिक विवरण साहित्यिक कृतिक सन्दर्भ बनि सकैत अछि; मुदा जीवनक विचारधारा सँ स्वयं रचनाक कलात्मक गुणवत्ता निश्चित नहि होइत। लेखक-परिचयक कागजी विवरण, मूल प्रकाशन आ प्रकाशित कृतिक वास्तविक पाठ सभकेँ अलग साक्ष्य मानल जाय।

एहि मूल संकलनक लेखक गजेन्द्र ठाकुर छथि; सुशील चन्द्र झा अध्ययनक विषयक साहित्यकार छथि। ई भूमिकागत भेद कृतिपञ्जी आ शोध-उद्धरणमे स्पष्ट रहबाक चाही।

02 छद्म समीक्षा-विवाद : साहित्यिक प्राथमिकता आ प्रमाण

अध्याय १मे पूर्व समीक्षकसभक साहित्येतिहासक निर्णयपर तीक्ष्ण प्रश्न उठाओल गेल अछि। मूल विवादक एक प्रमुख केन्द्र 'गामबाली' सन पूर्व प्रकाशित कृतिक अन्तर्जातीय विवाह-संबंधी सन्दर्भ आ पश्चात प्रकाशित अन्य कृतिक मूल्याङ्कनक तुलना अछि। साहित्यिक प्राथमिकता निश्चित करैत केवल पुरस्कार, प्रशंसा अथवा आलोचकक प्रसिद्धि नहि, प्रथम संस्करणक दिनाङ्क आ वास्तविक रचना-प्रसंग प्रमुख साक्ष्य होयत।

मूल पुस्तकमे नामोल्लेखित समीक्षकक विरुद्ध कठोर उद्देश्य-सम्बन्धी आरोप सेहो अछि। एहिमे लिखल आक्षेपकें लेखकक पक्षधर मत मानि, प्रतिपक्षक मूल उद्धरण, सन्दर्भ आ सम्भावित संशोधनक जाँच बिना प्रमाणित दुष्कर्मक निष्कर्ष नहि कयल जाय। अनुकूल व्याख्या आ असहमति रहितो आलोचनाक सच्चाई कायम रहबाक चाही।

“पहिल” साहित्यिक कृतिक दावामे विधा, विषय आ शिल्पक सीमा पहिने निर्धारित आवश्यक अछि। प्रथम अन्तरजातीय विवाह-विषयक रचना, प्रथम ‘गरिमायुक्त’ उपन्यास आ प्रथम सामाजिक प्रतिरोधक कथा तीन अलग साहित्येतिहासिक दावासभ छथि; एक-दोसराक स्थान नहि लेत।

03 घराडी : भूमिकेन्द्रित उपन्यासक मूल्यांकन

‘घराडी’ सम्बन्धी मूल अध्याय प्रकाशन-सन्दर्भ आ कथात्मक अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि। घराडी केवल बासक भूमि नहि; पारिवारिक उत्तराधिकार, सामाजिक स्वत्व, निवासक सम्मान आ स्थानीय वर्ग-सम्बन्धक अर्थ सेहो समेटैत अछि। मुदा एहि अर्थक प्रत्येक स्तरकें घटनागत पाठसँ जोड़ि देखबाक चाही, शीर्षक मात्रसँ निष्कर्ष तय नहि।

उपन्यासक साहित्यिक परीक्षा पात्रक निर्णय, घर-संबंधी विवादक क्रम, ग्रामीण संवादक स्तरीकरण आ लेखक द्वारा देल अथवा नहि देल अन्तिम न्यायमे अछि। जनजीवनक सामाजिक न्यायक प्रश्न महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा साहित्यिक संरचनाक उपलब्धि केवल समाजशास्त्रीय विषयसँ निर्धारित नहि होइत।

१९७३क मूल संस्करण आ वर्तमान डिजिटल प्रतिक पाठभेद उपलब्ध भेला पर भाषा, शीर्षक आ अनुच्छेद-विन्यासक मिलान सुदृढ़ निष्कर्ष दऽ सकैत अछि। ई अध्ययने मूल पुस्तकक प्रस्तुत विवरणक सीमामे आलोचनाक पद्धति स्पष्ट करैत अछि।

04 गामबाली : मृत्यु, दाह-संस्कार आ सामाजिक अधिकार

“गामबाली”क आलोचनामे कथानायिकाक मृत्यु आ ओकर दाह-संस्कारक प्रश्न आरम्भहि सँ केन्द्रीय बनैत अछि। यादव आ ब्राह्मण समाजक बीच अन्तिम संस्कारक अधिकारक उलझन धार्मिक विधिसँ बेसी सामाजिक स्वीकृति, विवाह आ स्त्रीक पहिचानक संकट रचैत अछि। एहन कथात्मक आरम्भ पाठककें प्रश्नक मूर्त रूप दैत अछि: मृत्यु-पछातियो स्त्रीपर समाजक केकर अधिकार?

दाह-संस्कारक समारोह कथानकमे सामाजिक सीमाक उद्घाटन करैत अछि; मुदा प्रत्येक समुदायकें एकहि मनोवृत्तिक नाम देब पाठक जटिलता घटाएत। परिवार, जाति, स्त्रीक इच्छा आ आर्थिक संसाधनक विभिन्न दबाव अलग-अलग पात्रक कथनसँ देखायल जाय।

आलोचक जखन एहि उपन्यासक ऐतिहासिक अग्रगामिता सिद्ध करैत छथि तखन १९८२क प्रकाशन-साक्ष्य महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा “एकमात्र” वा “पहिल” सन मूल्य-निर्णय व्यापक पूर्ववर्ती उपन्यास-सूचीक तुलना माँगैत अछि।

05 भामती नाटक : रंगमंच, दर्शन आ स्त्री-पात्र

सुशीलक 'भामती' नाटकक पहिल मंचन १९९१ आ प्रकाशन २०१३क सूचना मूल पुस्तकमे अछि। ई नाटक आ वाचस्पति मिश्रक 'भामती' दार्शनिक टीका एके साहित्यिक वस्तु नहि; शीर्षक-साम्यक कारण श्रेय आ विधा में भ्रम नहि होएबाक चाही। नाटकक विषयमे दार्शनिक चर्चा उपस्थित रहितहुँ ओकर रंगगत गठन स्वतंत्र परीक्षा माँगैत अछि।

रंगमंचीय समीक्षा लेल दृश्य-परिवर्तन, मंचक स्थान, संवादक लम्बाइ, पात्रक सक्रियता आ अभिनयक व्यवहार्यता महत्त्वपूर्ण अछि। अद्वैत वेदान्तक विचारक केवल सारांश देब नाटकक मूल्याङ्कन नहि। भामती नामक स्त्री-पात्रक स्वतन्त्र दृष्टि नाटकमे कोन स्तरपर व्यक्त भेल, से संवादक नाटकीय साक्ष्यसँ देखल जाय।

मूल कृति-प्रस्तुतिमे भारतीय दर्शन सम्बन्धी बाहरी व्याख्याकारक उल्लेख उपस्थित अछि; एहि बाहरी विद्वानक मतकें मूल नाट्यक पात्र-विश्वसँ अलग श्रेणीमे राखब आवश्यक अछि।

06 अस्मिता : लघुकथाक छोट आकार आ सामाजिक विडम्बना

‘अस्मिता’ (२०१६) लघुकथा-संग्रहक अध्ययनमे ‘बघोतिया’ सन कथा नामसँ समाचार, अफवाह आ सामाजिक व्यवहारक प्रश्न उठाएल गेल अछि। छोट कथा-संरचनामे सूचना आ गलत सूचना, पात्रक अनुमान आ अंतिम उद्घाटन एक विशेष लय बनबैत अछि। कथाक वास्तविक घटनाकें स्वतंत्र समाचारक तथ्य मानब असंगत अछि।

लघुकथाक मूल्यांकनमे मितव्ययी संकेत आ अन्तिम मोड़ महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा केवल चौंकाबयवाला अन्त साहित्यिक पूर्णता नहि। पात्रक विश्वसनीयता, भाषा-स्तर आ प्रत्यक्ष नैतिक उपदेशक स्थान परखल जाय।

अस्मिताक सामाजिक अर्थकें समूह-पहिचानक उद्घोषणा मात्र नहि, कथाकार द्वारा स्थापित विरोधी पात्रक अनुभवक जटिलता द्वारा पढल जाय।

07 सिद्धान्त : आलोचनात्मक औजारक उपयोग

मूल पोथीक पछिला “सिद्धान्त” विभागमे मार्क्सवाद, फ्रायडीय व्याख्या आ आधुनिक विचार-पद्धतिक तुलनात्मक चर्चा अछि। विभिन्न सिद्धान्तक उपयोगकें हर रचनापर एके साँचा लागू करबाक बदला विशिष्ट पाठ-प्रश्न अनुसार सीमित रखबाक चाही। सामाजिक यथार्थक मार्क्सवादी पाठ, अवचेतनक मनोविश्लेषणात्मक पाठ आ भाषा-रचनाक संरचनात्मक पाठ अलग कसौटी माँगैत अछि।

कविता वा कथामे आर्थिक संघर्ष भेटब मात्र मार्क्सवादक पुष्टि नहि; सपनाक उल्लेख मानसिक निदान नहि। समीक्षाक मूल साहित्यिक शर्त पाठक अनिश्चय, विडम्बना आ बहुव्याख्याक अधिकार अछि। गजेन्द्र ठाकुरक सिद्धान्त-विभाग तखने उपयोगी होयत जखन ई औजार लेखकक पात्रकें बोलबाक अवसर देत, स्वयं पूर्व-निर्णीत विचार नहि थोपत।

मूल दार्शनिक लेखकक नाम, कृतिप्रकाशन आ सिद्धान्तक सटीक परिभाषा प्रस्तुत कएल जाय तखन तुलनात्मक आलोचना अधिक प्रामाणिक बनत।

08 सिद्धान्तोत्तर : विखण्डनक बादक आलोचना

“सिद्धान्तोत्तर” विभाग आधुनिक आलोचनाक इतिहास, रूपवाद, संरचनावाद, विखण्डन आ ओकर बादक विचारक सम्भावना चर्चा करैत अछि। ‘उत्तर’ शब्द सिद्धान्तक सम्पूर्ण अन्त नहि सूचित करैत; ई साहित्य पढ़बाक विविध औजारक आत्मालोचना आ अधिकार-सीमाक प्रश्न सेहो अछि।

आधुनिक पाश्चात्य विचारक नाम जोड़लासँ कृतिक स्वयं विश्वसनीय मूल्याङ्कन स्वतः नहि होइत। एक मैथिली कथा अथवा नाटकक भाषिक घटना आ दार्शनिक अवधारणाक बीच सुस्पष्ट मध्यस्थ तर्क चाही। स्रोतक सामान्यीकरणकें मूल ग्रन्थक अभिलेखसँ मिलायब विद्वत्तापूर्ण समीक्षाक पूर्वशर्त अछि।

एहि विभागक अर्थवान योगदान एतय अछि जे स्थापित साहित्यिक मूल्यक प्रश्नोत्तरक संभावना खोलैत अछि; मुदा बहुविध सिद्धान्तक प्रस्तुति तखन परिणामकारी होयत जखन प्रत्येक सिद्धान्तक अपवाद, असहमति आ सीमारेखा सेहो लिखल जाय।

09 समेकित पाठ : पुनर्मूल्याङ्कनक इतिहास आ न्याय

सुशीलक कृतिक आलोचना जँ केवल पूर्व समीक्षकक विरोध बनि रहत तखन चारू मूल साहित्यिक पुस्तकक कलात्मक अर्थ ओझल भऽ जायत । उपन्यास, नाटक आ लघुकथाक विशिष्ट कसौटी द्वारा मूल्यांकन पुनर्मूल्याङ्कनकें सकारात्मक स्वरूप प्रदान करैत अछि ।

पुस्तकक विशिष्ट प्रश्न साहित्यक संस्थागत स्मृति अछि: जे कृति पहिने छपल, ओकरा बादक इतिहासमे की कारणसँ कतेक स्थान भेटल? एहि प्रश्नक उत्तर संग्रहालयक दस्तावेज, मूल संस्करण, समीक्षात्मक पत्रिका आ नूतन पाठ-दोहरावसँ निर्धारित होयत, आलोचकक आक्रोश मात्रसँ नहि ।

विदेह समानान्तर इतिहास-पद्धतिक सर्वोत्तम उपयोग बिसरल पाठक प्रमाणिक उपस्थिति सुनिश्चित करब अछि; एकटा नया एकाधिकारक साहित्यिक इतिहास गढ़ब नहि ।

समग्र मूल्याङ्कन

“नित नवल सुशील”क मूल महत्त्व मैथिलीमे पूर्व प्रकाशित कृतिसभक साहित्येतिहासिक दृश्यता आ आलोचनात्मक न्यायक प्रश्न अछि। ‘घराडी’ आ ‘गामबाली’ उपन्यास, ‘भामती’ नाटक आ ‘अस्मिता’ लघुकथा-संग्रहक भिन्न साहित्यिक आधार अपेक्षित अछि।

प्रकाशन-तिथि, कृतिगत शिल्प, मूल संस्करण आ प्रतिपक्षीय साहित्येतिहासकैँ एकसाथ जाँचलापर प्रारम्भिक महत्त्वक दावा स्पष्ट होयत। व्यक्तिगत नीयतपर निर्णय देबाक अपेक्षा पुनर्पाठ, अभिलेख आ कृतिक भाषा स्वयं स्थापित करब दीर्घजीवी समालोचनाक पथ अछि।

पुस्तकक सिद्धान्त-परिसर अध्ययन लेल उपयोगी सन्दर्भ दैत अछि; तथापि श्रेष्ठ आलोचना कृतिक प्रत्यक्ष अनुभवकैँ सिद्धान्तक नामद्वारा अदृश्य नहि करैत।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। नित नवल सुशील। संलग्न मूल Microsoft Word संस्करण; प्रकाशन-विवरण आ सम्पूर्ण समीक्षात्मक पाठ।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ५४

घराड़ी, गामबाली, भामती नाटक
आ अस्मिता लघुकथाक पुनर्पाठ;
साहित्यिक पूर्वत्व आ आलोचनाक
विवादक प्रमाणगत मूल्याङ्कन;
सिद्धान्त आ सिद्धान्तोत्तर अध्ययन।

विदेहक मूल साहित्यिक अभिलेख



www.videha.co.in



[GitHub Videha Archive](#)

मूल लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : आशीष अनचिन्हार

छओ बाइ नौ इञ्च — विदेह